Chairperson Message

मध्यकाल के आद्यप्रणेता गुरू जम्भेश्वर जी एक प्रगतिशील धर्मसंस्थापक, महान वैज्ञानिक, क्रांतिदर्शी, समाज सुधारक तथा मानवतावादी दृष्टिकोण के आध्यात्मिक प्रणेता थे। उनकी वाणी, उपदेश, सिद्धान्त, साधना, उन्नत्तीस धर्म नियम विभिन्न आयामों पर आधारित थे। उनके सिद्धान्तों एवं संदेशों में जीवन एवं जगत की आदर्शवादी व्यवस्था का सूत्रपात हुआ है। जो धार्मिक , सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों के मंगलमय नियमों के अभियान की भूमिका पर आधारित है। गुरू जम्भेश्वर जी व जाम्भाणी परम्परा ने जिस प्रकार की जीवन प्रणाली बनाई एवं अपने समाज की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार की, ऐसी आदर्श जीवन प्रणाली व समाज की संरचना व व्यवस्था बिश्नोई धर्ममत के समकालीन किसी भी अन्य सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज ने नहीं की थी। यह सम्पूर्ण व्यवस्था पूरे मानव समाज के लिये एक आर्द व्यवस्था थी। इस सामाजिक संरचना के पहले हमारे पूर्वजों ने मानव स्वभाव व प्रकृति का गहन अध्ययन किया। उन्होंने सृष्टि की रचना प्रक्रिया को बड़ी गहराई से अवलोकन किया तथा उनका प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया।

गुरू जाम्भो जी ने अपने संदेशों में मानव को आध्यात्मिक दृष्टि से श्रेष्ठ बनाने एवं ऊंचा उठाने तथा लोक कल्याण की ओर प्रेरित करने का सहज एवं सरल और व्यावहारिक मार्ग बताया था। इस कार्य हेतु उन्होंने परम्परागत आप्त वाक्यों एवं जड़तागत वाक्यों को न अपनाकर मात्र अनुभूत सत्य को ही प्रमुख संदेश माना तथा व्यावहारिकता की कसौटी पर खरा उतरने और जीवन व्यवहार में क्रियान्वित करने पर उसको उजागर किया।

इस जीवन एवं जगत में अनेक समस्याएं और संघर्ष है। अर्थात फूल और कॉटे दोनों ही हैं। मूल मन्तत्य यह है कि सुख और दुःख दोनों हैं। सुख का अनुभव मीठा है और दुःख का कड़वा। फूल अर्थात सुख की सुगंध एवं सौन्दर्य की एक सीमाएं हैं परन्तु दुःख अर्थात कॉटे का अनंत विस्तार है। वे अनेक रूपों में और अनेक कालों में विभाजित है। उनको किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। सांसारिक जीवन व्यवस्था में मानव को मानवता के लक्ष्य तक पहुंचना आवश्यक है। इसके लिये जीवनयात्रा में कदम–कदम पर सावधानी और संचेत रहना आवश्यक है। इन मानसिक द्वन्दों में उलझकर बीच में ही रूक जाना, दिग्भ्रमित हो जाना, हारकर बैठ जाना अथवा सन्तुलन खो देना मनुष्य की कमजोरी है। इसी कमजोरी को समाप्त कर उस पर विजय प्राप्त करके सतत् संघर्षशील जीवन ` लक्ष्य तक पहुंचने का एक सहज एवं सरल और अनुभूत उपाय की विधियां एवं नियम गुरू जाम्भोजी ने बतलाये हैं। उनकी इस जीवन पद्धति का लक्ष्य जीवनमुक्ति प्राप्त करना है। परन्तु यह कार्य वही कर सकता है जो अपने कर्त्तव्यों व उद्देश्यों का पालन सही तरीके से करता है व पवित्र आचरण को जीवन व्यवहार में उतारता है और सत्य और ईमानदारी से अपनी जीविका चलाता है। सत्य को ही प्रमाण स्वरूप मानता है। उन्नत्तीस धर्म–नियमों को आचरण में उतारता है। विनम्र और क्षमाशील है तथा जीवन की विधि को जानता है। पुरूषार्थ से ही ऊपर उठने का प्रयास करता है।

वे आगे इस बात पर भी बल देते हैं कि हे मानव! भलीमूल का सींचन कर अर्थात सद्कार्यों और लोककल्याणकारी कार्यों को बढ़ावा देकर लोक और परलोक दोनों को सुधारने का प्रयास कर। जिससे जीवन का लक्ष्य अर्थात् जीवनमुक्ति प्राप्त करेगा अर्थात आत्मदर्शन करेगा। एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। हे मनुष्य! इस संसार में तेरा जीवन स्थिर नहीं रहेगा, क्योंकि मृत्यु से बच नहीं सकेगा। जो जीवन की विधि को जानते हैं वे ही ऐसा कर सकते हैं।

वे मानव को मूल को खोजने की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि किसी भी तथ्य को खोजना और उनकी गहराई में जाना, उनका चिंतन–मनन करना और समझना या परखना, उसके उपरांत जीवन व्यवहार में उतारना, यही भली मूल का सींचन है। बिना मूल खोजे सफलता संदिग्ध है। सागर के गहरे पानी में पैंठने पर ही मोती मिल सकते हैं। सामाजिक प्राणी होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति को सद्कार्यों और लोककल्याण में अपनी सामर्थ्यानुसार सहयोग देना चाहिये।

मानव का दोहरा दायित्व है–अपने प्रति तथा समाज और संसार के प्रति । अतः जीवन की विधि के अन्तर्गत आत्मोत्थान के साथ लोकसंग्रह और लोकमंगलकारी कार्यों की गणना है। गुरू जाम्भो जी ने किसी न किसी रूप में निरन्तर लोकमंगल के कार्य करना मनुष्य का एक प्रमुख कर्त्तव्य बताया है। उनके अनुसार त्याग और परोपकार को जीवनविधि का अंग स्वीकार करना है। जो जैसा और जितना दे सकता है, उसको वैसा और उतना निष्काम भाव से अवश्य देना चाहिये। ऐसा करने से दोनों ओर से ही लोक और परलोक में आनंद की प्राप्ति होती है। यही मनुष्य जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।